पीएचडी उपाधि हेतु शोध-पूर्व प्रस्तुति

हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

HINDI KATHA SAHITYA MEIN LGBTQ JAN : VIVIDH AAYAM

PRE- SUBMISSION SEMINAR PAPER

(सेमिनार प्रपत्र)

शोध निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. वेद रमण पाण्डेय	मधुमिता ओझा
हिन्दी विभाग	पंजीयन संख्या : R-17RS01210119

हिन्दी विभाग

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

भारतीय समाज में जेंडर और यौनिकता विषय पर खुलकर चर्चा करना कभी भी सहज नहीं रहा है। स्त्री-पुरुष जेंडर में विभाजित समाज ने भिन्न जेंडर और यौनिकता यथा एलजीबीटीक्यू अर्थात लेस्बियन, गे, बाईसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर तथा क्वीयर पहचानों को हाशिये का जीवन जीने के लिए मजबूर किया। भारत में समलैंगिकता वर्जित रहा है। शब्दकोश के अनुसार समलैंगिकता का आशय है- "अपने लिंग के लोगों के प्रति यौन रूप से आकर्षित होना"। 19 वीं शताब्दी में समलैंगिक पहचानों पर चर्चा प्रारंभ हुआ। लेकिन यह चर्चा यौनिक संबंधों के स्थान पर पुरुषों के बीच के प्रेमपूर्ण मैत्रिक संबंधों पर आधारित था।

विभिन्न आंदोलनों व संगठनों के सहयोग से एलजीबीटीक्यू ने कमिंग आउट (कमिंग-आउट एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत एलजीबीटीक्यूजन पहले स्वयं को और फिर दूसरों के सामने अपनी पहचान को व्यक्त करते हैं) किया। अपने अधिकार और पहचान के लिए प्रयासरत इस समुदाय को अब न्यायपालिका तथा संसद का सहयोग भी मिल रहा है। 15 अप्रैल 2014 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने ट्रांसजेंडर को 'तृतीय लिंग' का दर्जा दिया तथा 6 सितंबर 2018 को समलैंगिकता को वैध घोषित किया। पहले की तुलना में कम किन्तु अब भी भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन को स्वीकारने की हिचक देखी जा सकती है।

हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन अलग-अलग रूपों में उभरते रहे हैं। बहुत बार यह मुख्य चरित्र के रूप में आये, बहुत बार कुछ प्रवृतियों के साथ आये जो मुख्यधारा के कुछ चरित्रों में उभरती हुई दिखी थी। किन्तु कभी भी बहुत गंभीरता के साथ इन चरित्रों को इनके मूल प्रवृति, स्वभाव और सामाजिक स्थिति-परिस्थिति को केंद्र में रखकर यह जाँचने की कोशिश नहीं हुई थी कि हिन्दी कथा साहित्य में इनका चित्रण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कितना उचित है, कितना असंतुलित है, कितना संतुलित है। चूंकि कथा साहित्य एक गंभीर विधा है। कथा साहित्य कल्पना का पुट होने के बावजूद फिल्म या अन्य रचनात्मक विधाओं से अलग, गंभीर तथा प्रमाणिक होता है। उसमें किसी पक्ष को बहुत ही गहराई और विशेषज्ञता के साथ रचनाकार चिह्नित करता है। उसमें सतही विश्लेषण बहुत कम

होता है। चूंकि एलजीबीटीक्यू विमर्श गूढ़, क्लिष्ट और बहुत बार बहुत गुमराह करने लायक स्थिति पैदा करता है तथा बहुत अस्पष्ट अवस्था में होता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि एलजीबीटीक्यूजन की मूल प्रवृति कथा साहित्य में कितनी वैज्ञानिक है ? कितनी नहीं है। इस शोध में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन के विविध आयाम को जानने-समझने की कोशिश हुई है।

इस शोध में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूज से संबंधित कुल 28 उपन्यास, 15 कहानियाँ, 1 कहानी संकलन, हिन्दी कथेतर साहित्य में 7 रचनाओं को आधार ग्रंथ के रूप में लिया गया है तथा 15 फिल्मों को भी शामिल किया गया है। कुछ रचनाओं में प्रवृतियाँ पाई गई, कुछ में मूल रूप से चरित्र स्पष्ट रूप में तो कुछ बिल्कुल अस्पष्ट स्वभाव में उभरकर सामने आया है। इन सभी आधारों पर उपन्यास और कहानियों का चयन किया गया। विश्लेषण के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य के दौरान पूरी कोशिश की गई है कि एलजीबीटीक्यूजन की मूल प्रवृति को पुस्तकों अर्थात द्वितीय स्त्रोत के अतिरिक्त प्राथमिक स्त्रोत से भी ढूँढी जाए। एलजीबीटीक्यूजन को लेकर पुस्तकों में भी बहुत स्पष्टता उपलब्ध नहीं था। इसीलिए यह आवश्यक था कि सीधे ऐसे लोगों से मुखातिब होकर उनके प्रवृति को समझा जाए। अब बहुत लोग इस पर चर्चा करते हैं लेकिन तब भी इस विषय के बहुत से पक्ष अब भी अनचिन्हे हैं, छिपे हैं। इस स्थिति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से एलजीबीटीक्यूजन के बीच जाना आवश्यक था। उन्हें लिखित रूप में चिह्नित करना मुश्किल था। उनके मूल प्रवृति के बारे में ऐसे लोगों से भी जानने का अवसर मिला जो सामाजिक रूप से चिह्नित नहीं हैं। इन सब चीजों को समझने के पश्चात उनसे बातचीत तथा उपलब्ध पुस्तकों के मुकम्मल अध्ययन के सहयोग से एलजीबीटीक्यूजन के बारे में एक स्पष्ट विचार बनाने के पश्चात हिन्दी कथा साहित्य के उपन्यासों और कहानियों में उपलब्ध चरित्रों का विश्लेषण उनकी प्रवृतियों का विश्लेषण करते हुए यह जानने की कोशिश की गई कि लेखकों द्वारा चित्रित संबंधित चरित्र या स्वभाव कितना उस प्रवृति से मेल खाता है, कितना करीब है। हिन्दी कथा साहित्य की परंपरा में 1920 से 2020 तक की अवधि में

एलजीबीटीक्यूजन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित या केंद्रित रचनाओं को उक्त शोध के आधार ग्रंथ के रूप में लिया गया है।

अध्यायानुसार सारांश

पहला अध्याय : जेंडर और यौनिकता

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जेंडर और यौनिकता की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इनके आपसी संबंधों एवं भिन्नता को समझाने का प्रयास किया गया है। जेंडर और यौनिकता को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए उसके विश्लेषण का उपयुक्त प्रयास किया गया है। सामान्यतः हम जानते है कि जेंडर सामाजिक निर्मिति है और यौनिक पहचान जैविक विशेषता। किन्तु कैसे यौनिकता भी समाज एवं संस्कृति द्वारा निर्मित मानकों से प्रभावित होती है, को तर्कसंगत ढंग से बताने तथा जेंडर और यौनिकता से जुड़े तमाम भ्रामक मनःस्थितियों को प्रश्नांकित किया गया है। जेंडर और यौनिकता के अंतरसंबंधों को बताते हुए लेखक Robert J Stoller अपनी पुस्तक 'Sex and Gender' में लिखते हैं कि "यौनिकता के उन पहलुओं को जिन्हें जेंडर कहा जाता है, मुख्यतः सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होते हैं ; जिसे जन्म के बाद सिखाया जाता है। यह सीखने की प्रक्रिया जन्म से शुरू होती है, धीरे-धीरे बढ़ते अहंकार विकास के साथ इसके प्रभाव शिशु में प्रकट होते हैं। यह सांस्कृतिक प्रक्रिया किसी समाज से निकलती है, लेकिन इसका अर्थ मां के माध्यम से लगाया जाता है। परन्तु वास्तव में उसके शिशु पर जो कुछ भी थोपा जाता है वह समाज के नज़रिये का अपना आदर्श संस्करण है। बाद में शिशु के पिता, भाई-बहन, मित्र और फिर धीरे-धीरे पूरा समाज उसकी विकासशील पहचान में उपस्थित रहता है"। जेंडर को प्रभावित करने वाले कारक कैसे जेंडर की परिभाषा गढ़ते है, इसे समझाने की कोशिश की गयी है। जेंडर को समझना केवल महिला तथा पुरुष और उनके बीच के संबंधों को समझना नहीं है। जेंडर की स्त्रियोचित और पुरुषोचित कंडीशनिंग की धारणा ने यह समझने

में सहायता की कि दरअसल समस्या समाज और संस्कृति द्वारा दी गयी औरत-मर्द की परिभाषा में है। जेंडर की तरह यौनिकता से जुड़े अपने ही कायदे हैं। यथा - कौन, कब, कहाँ, कैसे और किसके साथ यौन इच्छाएं ज़ाहिर कर सकता है। जेंडर और यौनिकता दोनों के साथ कायदे जुड़े हैं। जेंडर और यौनिकता को समझने के लिए पितृसत्ता, संबंधों की सत्ता, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकासक्रम से अवगत होना इस अध्याय का उद्देश्य है।

दूसरा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

इस अध्याय में एलजीबीटीक्यूजन की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। जेंडर और यौनिकता के आधार पर विभाजित दो खेमे स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त अन्य पहचानों पर पड़ने वाले पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव का विवेचन विश्लेषण किया गया है। एलजीबीटीक्यू विमर्श के अंतर्गत आने वाले पहचानों का परिचय एवं उनसे जुड़े विभिन्न संदर्भों की चर्चा की गयी है। विषमलैंगिक व्यक्ति की भांति ही लेस्बियन, गे, बाईसेक्शुअल, ट्रांसजेन्डर, इंटरसेक्स तथा क्वीयर व्यक्ति भी होते हैं। किन्तु समाज इस वैविध्यता को दरकिनार कर अपनी सहूलियत और समान्ययीकरण के आधार पर स्त्री-पुरुष में बांटने और परिभाषित करने का काम करता है।

साधारण जनमानस एलजीबीटीक्यूजन को जिस रूप में जानते है वह लेस्बियन, गे तथा ट्रांसजेन्डर हैं। लोग किन्नर और समलैंगिक से अवगत है। किन्तु बहुत से लोग इसके भितर की विभिन्न इकाइयों से परिचित नहीं है मसलन किन्नर, समलैंगिकता और ट्रांसजेंडर आदि पदबंध कई अर्थों और अवधारणाओं को समेटे हुए है, शोध कार्य में इसे स्पष्टता से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। शोध के अध्ययन विश्लेषण के दौरान एलजीबीटीक्यू के विभिन्न आयाम, उससे जुड़ी विभिन्न परिभाषाओं और उसके विभिन्न स्वरूपों को स्पष्ट किया गया है। हिंदी कथा साहित्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उल्लेखित, चित्रित एलजीबीटीक्यू समुदाय से संबंधित प्रवृतियों को भी रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। विभिन्न रचनाओं में प्रयुक्त आत्मसंलाप, संवाद-प्रतिसंवाद, चारित्रिक

विशेषताएं, शारीरिक एवं मानसिक मनोभावों, भाषा शिल्प आदि को एलजीबीटीक्यू की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के आलोक में देखने-समझने का प्रयास किया गया है ताकि एलजीबीटीक्यू समुदाय की विभिन्न अर्थछवियों एवं अंतरध्वनियों को स्पष्टता से उल्लेखित किया जा सके। इसीलिए इस अध्याय में एलजीबीटीक्यूजन के सारे स्वरूपों पर बात की गई है।

LGBTQ में 'L' से तात्पर्य लेस्बियन (Lesbian) तथा 'G' से तात्पर्य 'गे' (Gay) से है। 'लेस्बियन' तथा 'गे' अपने समान लिंग के प्रति दैहिक, मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर जुड़ाव महसूस करते हैं। बाइसेक्सुअल व्यक्ति का आकर्षण स्त्री और पुरुष दोनों लिंगों के प्रति होता है। ट्रांसजेन्डर शब्द का प्रयोग उन सभी लोगों के लिए किया जाता है जिनकी पहचान जन्म से प्राप्त जेन्डर पहचान से विपरीत हो। कुछ लोग अपनी पहचान को एल,जी,बी,टी के रूप में अभिव्यक्त करते है वही कुछ लोग अपनी पहचान को एल,जी,बी,टी की श्रेणी से निर्पेक्ष रखना चाहते हैं तथा स्वयं को बने-बनाये खांके (स्त्री-पुरुष) से अलग मानते हैं जिन्हें क्वीयर कहा जाता है। एलजीबीटीक्यू में 'क्यू' अर्थात क्वीयर न सिर्फ एलजीबीटीक्यू की बात करता है बल्कि एलजीबीटीक्यू+ (एलजीबीटी के समानांतर क्वीयर आदि) की भी बात करता है।

यह एक आम सामाजिक धारणा है कि यौन आकर्षण पुरुष जेंडर व्यक्ति एवं स्त्री जेंडर व्यक्ति के बीच होता है जिसे हम विषमलैंगिकता के नाम से जानते हैं। समान लिंग के प्रति भी आकर्षण होता है /हो सकता है, इसे प्रायः समाज का मुख्यधारा स्वीकार नहीं करना चाहता। एक स्त्री निर्धारित व्यक्ति की पहचान जेंडर के आधार पर स्त्रीत्व या पुरुषत्व एवं यौन अभिविन्यास के आधार पर विषमलैंगिक, द्विलैंगिक (बाईसेक्सुअल), समलैंगिक के बीच कुछ भी हो सकता है। दूसरी तरफ स्वयं को 'गे' बताने वाला व्यक्ति जेंडर के आधार पर स्त्रीत्व या पुरुषत्व जैसा कुछ भी व्यवहार कर सकता है। स्त्री या पुरुष एवं विषमलैंगिक या समलैंगिक के अलावा यौन अभिविन्यास तथा जेंडर पहचान के कई प्रकार होते हैं और हो सकते हैं जिनपर शोध में विस्तार से चर्चा किया गया है। एलजीबीटीक्यूजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए स्त्रीवाद की सैद्धांतिकी की विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गयी है। जेंडर

और यौनिकता से जुड़े मुद्दे को बहस के केंद्र में लाने में स्त्रीवाद की अहम भूमिका रही है। स्त्रीवाद व स्त्री विमर्श जिस रूप में स्त्री की अस्मिता, अस्तित्व, देह, जेंडर, यौन तथा यौनिकता को लेकर विमर्श कर रहा था उसी के समानांतर/कालांतर में क्वीयर विमर्श भी इन मुद्दों को लेकर नये सिरे से इसे बहस के केंद्र में ला रहा था। इस तरह स्त्रीवादी बहस की एक शाखा लेस्बियन स्त्रीवाद से होते हुए एलजीबीटी और फिर क्वीयर (Queer) विमर्श की ओर मुड़ती है।

तीसरा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : अस्मिता और अधिकार की लड़ाई

इस अध्याय में एलजीबीटीक्यू विमर्श के उद्भव एवं उसके विकास-क्रम के इतिहास तथा एलजीबीटीक्यू से जुड़े आंदोलनों की चर्चा की गयी है। पश्चिम एवं भारत में एलजीबीटीक्यू जन से जुड़े कानून एवं आंदोलनों को रेखांकित किया गया है। धारा 377 सहित अन्य सभी पक्षों पर चर्चा की गयी है। भारत में पहली बार समान लिंग के प्रति आकर्षण या प्रेम भाव अथवा प्रेम आलाप को सन् 1870 में तत्कालीन अंग्रेजी शासकों द्वारा अपराध की श्रेणी में रखा गया इससे पूर्व समलैंगिक संबंधों को अपराध की दृष्टि से देखने की रवायत नहीं थी जिसके अंतर्गत सहमति के आधार पर भी बने समलैंगिक संबंधों के लिए दस वर्ष तक की उम्र कैद की सजा का प्रावधान बनाया गया था। किन्तु यह धारा सहमति के आधार पर बनाए गए संबंधों और दबावपूर्वक बनाए गए संबंधों के बीच कोई फर्क नहीं करता जिसपर विस्तार से चर्चा की गयी है। उक्त अध्याय में यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि कैसे धारा 377 के साथ अन्य धारा यथा धारा 375 (यौनिक अत्याचार) को घुला-मिला दिया जाता है जिससे एलजीबीटीक्यू समुदाय को तमाम तरह के शोषण को झेलना पड़ता है।

धारा 377 के संबंध में उन सभी संगठनों, समितियों एवं समूहों के बयान को दर्ज किया गया है जिन्होंने इस धारा के पक्ष एवं विपक्ष में अपनी बात रखी और इस आधार पर तार्किकतापूर्वक धारा 377 को विश्लेषित किया गया है। एलजीबीटीक्यूजन के राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकारों के लिए जिन छोटे-बड़े एलजीबीटी समूहों, अकादमिक चर्चाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं ने आन्दोलनात्मक

कार्य किए, उनकी भूमिका को व्यक्त करने तथा एलजीबीटीक्यूजन के विकास में उसके महत्व की चर्चा की गई है।

विभिन्न क्षेत्रों एवं सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े लोग जैसे ऑस्कर वाइल्ड, सोफ़िया पार्नोक, विक्रम सेठ, आलोक वैद-मेनन, ऋतुपर्णा घोष, करण जौहर, एल्टन जॉन, फ्रीडा काहलो, रेन डव, माइल्स मैकेना, एलेन ट्यूरिंग, अत्री कर, मानबी बंदोपाध्याय, बौनी पॉल, मार्टिना नवरातिलोवा, सांथी सौंदराजन , राजकुमार मानवेंद्र सिंह गोहिल , नील घोष , थॉमस बैटी , कामी सिड आदि व्यक्तियों के योगदान की चर्चा की गई है। ये सभी व्यक्तित्व यौनिकता से जुड़े बाइनरी मानदंडों के अनुरूप स्वयं को अभिव्यक्त नहीं करते बल्कि अपनी मूल भावना को घोषित रूप में 'कमिंग आउट' करते हैं। कमिंग आउट कर इन पहचानों ने न केवल अपनी अस्मिता और अधिकार की लड़ाई लड़ी बल्कि एलजीबीटीक्यूजन को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी किया।

चौथा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : इतिहास और वर्तमान

चौथे अध्याय में एलजीबीटीक्यूजन के संदर्भ के दृष्टिकोण से इतिहास, पुराण एवं अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ में जेंडर और यौनिकता से जुड़े वैविध्यता की मौजूदगी को चिह्नित किया गया है। भारतीय पौराणिक व प्राचीन कथाओं में ऐसी कई कथाएं मौजूद हैं जो समलैंगिक संबंधों की मौजूदगी को उजागर करते हैं। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण, वेदव्यास कृत महाभारत, वात्स्यायन के 'कामसूत्र' में किन्नरों के साथ-साथ स्त्री-स्त्री तथा पुरुष-पुरुष के बीच होने वाले यौनिक संबंधों की चर्चा तथा वराह मिहिर के 'वृहत जातक' में किन्नरों सहित समलैंगिक स्त्रियों का चित्रण हुआ है। लगभग छठी शताब्दी के आस-पास दक्षिण तथा मध्य भारत में प्रसिद्ध हिन्दू मंदिरों का निर्माण हुआ। मध्य भारत में बने खजूराहों, पूर्व में पूरी, दक्षिण में तंजुवर जैसे मंदिरों पर बनी नक्काशी तथा चित्रों में पुरुष-पुरुष और महिलाओं के बीच आपसी स्वच्छंद प्रणय संबंधी कलाकृतियों को देखा जा सकता है।

प्रस्तुत अध्याय में सिनेमा में अभिव्यक्त एलजीबीटीक्यूजन के स्वर की चर्चा भी की गयी है। यौनिकता पर चर्चा करना हमारे समाज में आसान नहीं रहा है, यही कारण है कि क्वीयर संबंधों, समलैंगिकता तथा ट्रांसजेंडर पर केन्द्रित फिल्में जब भी बनी वह उनके व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष को ही उजागर करता है पर कुछ फिल्में ऐसी भी रही है जिन्होनें क्वीयर संबंधों व उनकी जटिलताओं के बारे में समझ बनाने और समाज में प्रवेश कर गयी भ्रमित धारणाओं को तोड़ने का भी प्रयास किया है। 'फायर'(1996), दरमियान: इन बिटवीन (1997), तमन्ना (1997), शबनम मौसी (2005), माई ब्रदर निखिल (2005), ट्राफिक सिग्नल (2007), आई एम (2011), बोल (2011), मार्गेरिटा विथ अ स्ट्रा (2014), कपूर एंड संस (2016), अलीगढ़ (2016), डिअर डैड (2016), एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (2019), मिस मैन (2019), और शुभ मंगल ज्यादा सावधान (2020) जैसी फिल्मों पर विचार-विमर्श किया गया है।। प्रारंभ में भारतीय सिनेमा में ऐसे विषयों को हास्यास्पद रूप में दिखाया गया। आज भी सिनेमा का रुख सकारात्मक नहीं है बावजूद इसके इन विषयों पर बातचीत करने के लिए एक वातावरण निर्मित करता है।

पाँचवा अध्याय : हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ)

प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन की उपस्थिति एवं उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। यह भी जानने और समझने की कोशिश की गयी है कि क्या ये पात्र वास्तविक धरातल पर एलजीबीटीक्यू जन का प्रतिनिधित्व करते हैं ?

पाँचवे अध्याय में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन का विश्लेषण किया गया है। यौनिकता से जुड़े सभी प्रश्नों को विभिन्न कथाओं के आलोक में विश्लेषित किया गया है। एलजीबीटीक्यू विमर्श के अनुसार यौनिकता का कोई निश्चित पैमाना नहीं है। इसका कारण यह है कि ऐसे कई लोग है जो स्वयं को एलजीबीटी की घोषित परिभाषा के दायरे में नहीं रखना चाहते है लेकिन

वे स्वतंत्रतापूर्वक अपने समान लिंग के प्रति आत्मीय संबंधों में बने रहना चाहते है। अपने समान लिंग के प्रति उनका प्रेम तथा यौनिक आकर्षण ही उन्हें 'क्वीयर' की कोटी में ला खड़ा करता है। हिंदी साहित्य में भी ऐसे पात्र दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए निराला की रचना 'कुल्लीभाट' (1939) में कुल्लीभाट का अपने मित्र निराला के प्रति भावनात्मक तथा रूमानी आकर्षण देखा जा सकता है।

'शेखर एक जीवनी' (1941-44) उपन्यास का शेखर बाईसेक्सुअल है। शेखर को शारदा और शशि के साथ-साथ कुमार के प्रति आकर्षित होते हुए भी देखा जा सकता है। 'अज्ञेय' द्वारा रचित उपन्यास 'नदी के द्वीप' (1951) का हेमेन्द्र, उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यास 'शहर में घूमता आईना' (1963) का चेतन, राजकमल चौधरी के बहुचर्चित उपन्यास 'मछली मरी हुई' (1966) की शीरी, अमृतलाल नागर के उपन्यास 'नाच्यौ बहुत गोपाल'(1978) की अम्मा (बाईसेक्सुअल) तथा बैंड मास्टर कप्तान जैक्सन (समलैंगिक), शुभा वर्मा के उपन्यास 'अनाम रिश्तों के नाम' (1985) की सब्रीना, केवल सूद द्वारा रचित उपन्यास 'मुर्गीखाना'(1987) की शीला, सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए'(1993) की दिव्या कत्याल, मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी'((1994) का केन्द्रीय चरित्र हरिहर दत्त तिवारी उर्फ हरिया हरक्युलिज के पिता राय साहब गिरवाण दत्त तिवारी और 'हमजाद' (1996) उपन्यास में जेन्डर और सेक्सुअलिटी से जुड़ी बनी बनायी मान्यताओं से भिन्न विभिन्न पात्र, प्रभा खेतान के उपन्यास 'पीली आंधी' (1996) का गौतम, गीतांजलि श्री के उपन्यास 'तिरोहित' (2001) में ललना और चच्चो की अद्भुत मित्रता, नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' (2002) में किन्नर के रूप में जन्मी नंदरानी, संजीव के जीवनीपरक उपन्यास 'सूत्रधार' (2003) में 'चाँदी सिंह' किन्नर थे। अनीता राकेश द्वारा लिखित उपन्यास 'गुरुकुल' (2008) में एलजीबीटीक्यू पर होने वाली चर्चा, वनमाली कथा सम्मान 2011 से सम्मानित मनोज रूपड़ा के उपन्यास 'प्रतिसंसार' (2008) में किन्नर का जिक्र, पंकज बिष्ट के उपन्यास 'पंखवाली नाव' (2009) में समलैंगिकता के विषय को उठाया गया है। जिसके केंद्र में 'गे' की चर्चा प्रमुखता से है। 'गे'के मार्फत ही 'लेस्बियन' तथा 'ट्रांससेक्सुअल' संबंधों पर भी हल्की-फुल्की चर्चा होती है। गीतांजलि चटर्जी के

उपन्यास 'तीसरे लोग' (2010) का चरित्र डॉ. स्मारक होमोसेक्सुअल 'गे' है प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' (2011) उपन्यास का प्रतिपाद्य विषय वे लोग, वे समूह व समुदाय हैं जिन्हें हाशिये का जीवन जीने के लिए विवश किया गया जिन्हें 'तीसरी श्रेणी', 'तीसरे जेंडर', 'तीसरी ताली' में शामिल किया गया। साथ ही लेखक समलैंगिक पहचानों पर भी अपनी कलम चलाते दिखाई देते हैं। शची मिश्र के उपन्यास 'चाय कॉफी उर्फ़ तीसरी दुनिया' (2014) का मयंक 'गे' है। महेंद्र भीष्म का उपन्यास 'किन्नर कथा' (2016) किन्नर जीवन पर आधारित है। निर्मला भुराड़िया के उपन्यास 'गुलाम मंडी'(2016) में किन्नरों की जीवन-गाथा, भगवंत अनमोल के उपन्यास 'ज़िंदगी 50-50' (2017) का केन्द्रीय विषय 'किन्नर जीवन' से जुड़ा है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' (2017) में 'किन्नर जीवन की व्यवहारिकता को व्यवहारिक घटनाओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है। गिरिजा भारती के उपन्यास 'अस्तित्व' (2018) की पात्र प्रीत का जन्म किन्नर के रूप में होता है, उपन्यासकार सुभाष अखिल का उपन्यास 'दरमियाना' (2018) तारा, रेशमा, संध्या, सुनंदा, रेखा और दया नामक किन्नरों के संघर्षात्मक जीवन की कहानी है। तथा रूथ वनिता का प्रथम उपन्यास 'परियों के बीच' (2021) पूर्व-औपनिवेशिक काल में शायरा नफ़ीस बाई और मशहूर तवायफ़ चपला बाई के बीच के प्रेम को अभिव्यक्त करता है जहां समलैंगिक प्रेम को सामाजिक वर्जना के रूप में नहीं देखा जाता था। उपर्युक्त सभी उपन्यासों के पात्र एलजीबीटीक्यू समुदाय से संबंधित हैं।

अध्याय में हिन्दी कहानियों में एलजीबीटीक्यूजन की मौजूदगी को चिह्नित किया गया है। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का कहानी संग्रह 'चाकलेट' (1928) जिसमें आठ कहानियाँ संकलित हैं, इस्मत चुगताई की प्रसिद्ध कहानी 'लिहाफ़'(1944), शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'बिंदा महाराज' (1956), राही मासूम रजा की कहानी 'खलीक अहमद बुआ', राजेन्द्र यादव की कहानी 'प्रतीक्षा', पंकज सुबीर की कहानी 'अंधेरे का गणित', निर्मल जसवाल की कहानी 'रेत का रिश्ता', अनिलप्रभा कुमार की कहानी 'दीवार के पार', आकांक्षा पारे काशिव द्वारा लिखित कहानी 'सखी साजन', सूरज प्रकाश की कहानी 'ये जो देश है मेरा', डॉ. लवलेश दत्त की कहानी 'स्पर्श', सच्चिदानंद जोशी की

कहानी 'पुत्रिकामेष्टि', स्वाती तिवारी की कहानी 'वो जो भी है, मुझे पसंद है', नरेंद्र सैनी की कहानी 'इक लड़की अनजानी-सी', तारिक असलम 'तस्नीम' की कहानी 'ओवरकोट' तथा सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है' को शामिल किया गया है।

जिन रचनाओं में पात्रों को उनके हाव-भाव तथा प्रवृतियों के आधार पर एलजीबीटी श्रेणी में रखा गया है वह शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, शहर में घूमता आईना , नाच्यौ बहुत गोपाल, हमजाद, हरिया हरक्युलिज की हैरानी, पीली आंधी तथा पंकज सुबीर की कहानी 'अंधेरे का गणित' है। अमृतलाल नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' में कप्तान जैक्सन तथा उसके करीबी मित्र जेफ़रसन की समलैंगिकता स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है। इसी प्रकार अनाम रिश्तों के नाम, मुझे चाँद चाहिए, पंखवाली नाव, तीसरे लोग, चाय कॉफी उर्फ तीसरी दुनिया, तीसरी ताली, परियों के बीच और कहानियों में प्रतीक्षा, रेत का रिश्ता, दीवार के पार, सखि साजन, ये जो देश है मेरा, स्पर्श, वो जो भी, मुझे पसंद है तथा आग में गर्मी कम क्यों है में एलजीबीटी चरित्र प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं। कुछ रचनाएं ऐसी भी हैं जिनमें एलजीबीटी चरित्रों का उल्लेख मात्र किया है। जैसे संजीव का सूत्रधार, अनीता राकेश का गुरुकुल तथा मनोज रूपड़ा का प्रतिसंसार।

किन्नर जीवन व उनके पीड़ा-यातना को नीरजा माधव, महेंद्र भीष्म, भगवंत अनमोल, चित्रा मुद्गल, गिरिजा भारती, शिवप्रसाद सिंह तथा राही मासूम रजा का रचना कर्म विचार के केंद्र में लाता है। इन्होंने किन्नर विमर्श मुद्दे पर खुलकर बहस किया। इन लेखकों ने एक ओर किन्नर जीवन से जुड़े सामाजिक अनुभवों के गहरे सरोकारों को व्यक्त किया है तो भगवंत अनमोल जैसे रचनाकार ने अपने देखे और भोगे यथार्थ को अर्थवत्ता प्रदान किया। प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराडिया, तथा सच्चिदानंद जोशी ने ट्रांसजेंडर विषय पर लिखा।

जिन रचनाओं के अनुसार समलैंगिकता का उद्भव प्रतिकूल परिस्थितियों, विवशता तथा उपेक्षा के कारण होता है उनमें राजकमल चौधरी का उपन्यास 'मछली मरी हुई', केवल सूद का उपन्यास

'मुर्गीखाना', गीतांजलि श्री का उपन्यास 'तिरोहित' इस्मत चुगताई की कहानी 'लिहाफ़' तथा पंकज सुबीर की कहानी 'अंधेरे का गणित' है तथा जिसमें चरित्र को आक्रामक रूप में (समलैंगिकता को) दिखाया गया है वह अमृतलाल नागर का 'नाच्यौ बहुत गोपाल' है।

उग्र के 'चाकलेट' कहानी-संग्रह में संकलित आठों कहानियाँ (हे सुकुमार, व्यभिचारी प्यार, जेल में, चाकलेट, पालट, हम फिदाये लखनऊ, कमरिया नागन-सी बलखाय, चाकलेट-चर्चा), इस्मत चुगताई के लिहाफ़, तथा तारिक असलम 'तस्नीम' की कहानी ओवरकोट पिडोफिलिया (किसी भी बच्चे के प्रति यौन रुचि या यौन दुर्व्यवहार करना) पर आधारित है।

अज्ञेय के उपन्यास 'नदी के द्वीप' के भुवन तथा गीतांजलि चटर्जी के उपन्यास 'तीसरे लोग' के किसना का एलजीबीटी के रूप में प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता किन्तु भिन्न यौनिकता के कारण उनके वैवाहिक संबंधों (विषमलैंगिक संबंधों) में विच्छेद दिखाई देता है। चाय कॉफी उर्फ तीसरी दुनिया में एलजीबीटी पहचान को रचनाकार ने पारंपरिक स्त्री-पुरुष पहचान के रूप में दिखाया है। मयंक 'गे' है जिसका शरीर पुरुष का तथा मन औरत का है। एक धारा ऐसी है जिसका मानना है कि पुरुष पुरुष के प्रति इसीलिए आकर्षित होता है क्योंकि वह भीतर से स्वयं को स्त्री मानता है। तथा दूसरी धारा के अनुसार पुरुष का पुरुष के प्रति आकर्षित होना सहज और स्वाभाविक है, यह एक प्रवृति है इसमें स्वयं को स्त्री मानने जैसा कुछ नहीं है।

छठा अध्याय : हिन्दी कथेतर साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ)

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत हिन्दी कथेतर साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन की उपस्थिति का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। सामाजिक कार्यकर्ता माया शर्मा और शांति द्वारा लिखित 'भँवरी' की जीवनी (1996) में दो विवाहित स्त्रियों के प्रेम और आकर्षण को देखा जा सकता है। जीवन के छोटे-बड़े कई अनुभवों से गुजरी भँवरी के लिए उसकी साथिन से बढ़कर कोई नहीं था। भले ही भँवरी

का सामान्य विवाह (विषमलैंगिक) हुआ हो, वह संतान भी सृजन कर रही है, लेकिन उसके बाद भी यह माना जाएगा कि उसमें समलैंगिक प्रवृति है। यहां उसकी समलैंगिक प्रवृति पारिवारिक संस्कार तथा सामाजिक नैतिकता के कारण दब गई थी। समाज में स्त्री-पुरुष के प्रेम को प्रदर्शित करने की परंपरा रही है लेकिन स्त्री-पुरुष संबंधों के इतर स्त्री-स्त्री, पुरुष-पुरुष के बीच भी उसी भावना के प्रेम संबंध को एलजीबीटीक्यू के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के औपन्यासिक आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसै'(2002) में मैत्रेयी पुष्पा की माँ कस्तूरी और उनकी सहेली गौरा के बीच के अंतरंग संबंधों का ताना-बाना दिखाई देता है। माया शर्मा की पुस्तक 'लविंग वूमेन'(2006) एक-दूसरे के साथ रहने वाली स्त्रियों की जीवनियां हैं। यह पुस्तक उन समलैंगिक स्त्रियों के जीवन के बारे में है जिनका संबंध मजदूर वर्ग से है। पुस्तक में लिखित तथ्य भेंटवार्ता पर आधारित है। यह पुस्तक इस बात को खारिज करती है कि सभी समलैंगिक लेस्बियन महिलाओं का संबंध पाश्चात्यीकृत, उच्चवर्ग, मध्यम वर्ग व शहरों से है। इन कहानियों का संबंध वास्तविकता से है, यथार्थ से है और हमारे इसी समाज से है। प्रभाकर श्रोत्रिय की नाट्य रचना 'इला'(2009) पौराणिक कथा पर आधारित है। इसमें इला के सुददुम्न बनने अर्थात स्त्री के पुरुष रूप में रूपांतरण की कहानी है। लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा 'मैं हिजड़ा ... मैं लक्ष्मी' (2015) लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी के आत्मसंघर्ष को व्यक्त करती है। लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी अपनी आत्मकथा में बने बनाये कई पारंपरिक और सामाजिक ढ़र्रे को प्रश्नांकित करती है। आत्मकथाकार ने न केवल मुख्यधारा के समाज बल्कि हिजड़ा समाज में व्याप्त हो चुकी रूढ़ परंपराओं को भी चुनौती दी है। मानोबी बंद्योपाध्याय की आत्मकथा 'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन' (2018) ट्रांसस्त्री के संघर्ष को रेखांकित करता है। पुरुष तन में फंसा मानोबी का नारी मन हमेशा पुरुष को चाहता था। लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि मानोबी का जन्म बेशक पुरुष के शरीर में हुआ है लेकिन हमेशा वह स्वयं को स्त्री ही मानती रही। सुधीर चंद्र द्वारा लिखित सुप्रसिद्ध चित्रकार भूपेन खख्खर की जीवनी 'भूपेन खख्खर : एक अंतरंग संस्मरण'(2020) में भिन्न यौनिकता के कारण अपने अकेलेपन और तड़प से जूझ रहे भूपेन खख्खर के जीवन के कठिन दौर और संघर्षों की चर्चा हुई है।

सांतवा अध्याय : भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : समस्याएं और संभावनाएं

इस अध्याय में समाज में एलजीबीटीक्यूजन की अवस्थिति उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की चर्चा की गयी है।

उक्त अध्याय में एलजीबीटीक्यूजन की समस्याओं एवं संभावनाओं को समझने के लिए विभिन्न रचनाकारों के साथ-साथ स्वयं को घोषित तौर पर एल, जी, बी तथा टी कहने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं व्यक्ति विशेष से साक्षात्कार लिया गया है।

आधार ग्रंथ :

1. अज्ञेय, नदी के द्वीप, दिल्ली : प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स, संस्करण : 1951
2. अज्ञेय, शेखर एक जीवनी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पहला भाग-उत्थान, संस्करण : 2015
3. अज्ञेय, शेखर एक जीवनी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, दूसरा भाग-संघर्ष, संस्करण : 2015
4. अमृतलाल नागर, नाच्यौ बहुत गोपाल, दिल्ली : राजपाल एण्ड संज, संस्करण : 2017
5. अनीता राकेश, गुरुकुल, खंड-1, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2008
6. अनीता राकेश, गुरुकुल, खंड-2, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2009
7. इस्मत चुगताई, लिहाफ़(कहानी-संग्रह), नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2016

8. उपेन्द्रनाथ अश्क, शहर में घूमता आईना, इलाहाबाद-1 : नीलाभ प्रकाशन, संस्करण : 1963
9. केवल सूद, मुर्गीखाना, दिल्ली : शिलालेख प्रकाशन, संस्करण : 2015
10. गीतांजलि श्री, तिरोहित, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2007
11. गीतांजलि चटर्जी, तीसरे लोग, दिल्ली : सामायिक प्रकाशन, संस्करण : 2010
12. गिरिजा भारती, अस्तित्व, कानपुर : विकास प्रकाशन, संस्करण : 2018
13. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 2017
14. डॉ. शशिकला , सुरेखा बनकर राय (अनुवाद), मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2015
15. डॉ .एम.फिरोज.खान (सं), थर्ड जेन्डर: हिन्दी कहानियाँ, कानपुर : अनुसंधान पब्लिशर्स, संस्करण : 2018
16. नीरजा माधव, यमदीप, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 2002
17. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 2016
18. पंकज बिष्ट, पंखवाली नाव, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2009
19. पाण्डेय बेचन शर्मा'उग्र', चाकलेट, कलकत्ता : टंडन ब्रदर्स प्रकाशन, तृतीय संस्करण : 1953
20. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, नई दिल्ली : राजपाल प्रकाशन, संस्करण : 2017
21. मनोहर श्याम जोशी, हमज़ाद, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 1996
22. मनोहर श्याम जोशी, हरिया हरक्यूलीज की हैरानी, नई दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण : 1994
23. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, संस्करण : 2016
24. मनोज रूपड़ा, प्रतिसंसार, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण : 2008
25. मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुण्डल बसै, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2002

26. Maya sharma, Loving women: Being lesbian in unprivileged India, New Delhi : Yoda Press : 2006

27. मानोबी बंद्योपाध्याय, झिमली मुखर्जी पांडे (लेखिका), पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन, दिल्ली : राजपाल एण्ड संज प्रकाशन, संस्करण : 2018

28. राजकमल चौधरी, मछली मरी हुई, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 1966

29. रूथ वनिता, परियों के बीच, नई दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण : 2021

30. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2015

31. शुभा वर्मा, अनाम रिश्तों के नाम, दिल्ली : विवेक प्रकाशन, संस्करण : 1985

32. शची मिश्र, चाय कॉफी उर्फ़ तीसरी दुनियां, कोलकाता : मानव प्रकाशन, संस्करण : 2014

33. सुरेन्द्र वर्मा, मुझे चाँद चाहिए, दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, संस्करण : 1993

34. सुभाष अखिल, दरमियाना, कानपुर : अमन प्रकाशन, संस्करण : 2018

35. सुधीर चन्द्र, भूपेन खख्खर: एक अन्तरंग संस्मरण, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2020

36. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नंदकिशोर नवल (सं), कुल्लीभाट, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 1983

37. संजीव, सूत्रधार, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2003

38. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2011

39. प्रभाकर श्रोत्रिय, इला, नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, संस्करण : 2009

40. प्रभा खेतान, पीली आंधी, नई दिल्ली : राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण : 2001

सधन्यवाद

मधुमिता ओझा

शोधार्थी

पंजीयन संख्या : R- 17RS01210119